International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(1): 168-170

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(1): 168-170
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 25-11-2022
Accepted: 28-12-2022

**डॉ. हर्ष वर्धन सिंह**
पूर्व सहायक प्राध्यापक, संस्कृत विभाग, देवता महाविद्यालय, मोरना, बिजनौर

**Corresponding Author:**
**डॉ. हर्ष वर्धन सिंह**
पूर्व सहायक प्राध्यापक, संस्कृत विभाग, देवता महाविद्यालय, मोरना, जिला– बिजनौर

# माहेश्वर सूत्रों में हकार द्विरुक्ति एक विमर्श

## डॉ. हर्ष वर्धन सिंह

**सारांश**
संस्कृतसाहित्यं निजगरिमा विषये न केवलं भारतवर्षे अपितु अखिलसंसारे विख्यातमस्ति। विश्वस्य विद्वत्मण्डलम् एकस्वरेण अस्य महिमा गायति। किन्तु दुर्भाग्यस्य विषयः अस्ति यत् अस्माकमेव देशे अनेके जनाः सन्ति; ये इदं साहित्यं केवलं 'रोमानी' अस्ति इति संज्ञां दत्वा अद्यतनस्य संघर्षशीलसमाजस्य कृते अयं सर्वथानुपयोगीति वदन्ति। एतस्य प्रचारं–प्रसारमनावश्यकमिति साधयन्ति। किन्तु प्रत्यक्षे किं प्रमाणम्? भास–कालिदास–शूद्रक–विशाखदत्त–भवभूति–भारवि–माघ–भट्टि–श्रीहर्ष–सुबन्धु–दण्डी–बाण–हर्ष प्रभृतयः स्वनामधन्यकवयः निज़कृतिषु न केवलं साहित्यिकसौन्दर्यमपितु भारतीयसंस्कृतिसभ्यतायाः निदर्शनं राष्ट्रियभावनायाः पोषणमपि च कुर्वन्ति स्म।

**कुटशब्दः** माहेश्वर सूत्रों, हकार द्विरुक्ति, संस्कृतसाहित्यं

**प्रस्तावना**
अइउण् । 1 । ऋलृक् । 2 । एओङ् । 3 ।. ऐऔच् । 4 । हयवरट् । 5 । लण् । 6 ।ञमङणनम्। 7 । झभञ् । 8 । घढधष् । 9 । जबगडदश् । 10 । खफछठथचटतव् । 11 ।
कपय् । 12 । शषसर् । 13 हल् । 14 ।
अइउण् आदि ये चौदह सूत्र हैं इसलिए इन्हें चतुर्दशसूत्र कहते हैं। इन को माहेश्वर सूत्र, शिवसूत्र,प्रत्याहार सूत्र भी कहा जाता है। इन सूत्रों में सभी वर्णों का उपदेश किया गया है। इन सूत्रों में हकार का दो बार उल्लेख किया गया है। शेष सभी वर्णों का केवल एक बार उल्लेख है। इसलिए एक सामान्य प्रश्न उठता है कि हकार का प्रयोग दो बार क्यों किया गया है। इस प्रश्न का समाधान महाभाष्य, काशिका, प्रौढ़ मनोरमा आदि ग्रन्थों में किया गया है। माहेश्वर सूत्रों के हयवरट् सूत्र में हकार का ग्रहण अट्, हश्, अश् और इण् प्रत्याहारों में हकार के ग्रहण हेतु किया गया है। जबकि हल् सूत्र में हकार का ग्रहण वल्, रल्, झल् तथा शल् प्रत्याहारों में हकार के ग्रहण हेतु किया गया है। इसे हम दो भागों में समझने का प्रयास करेंगे।

**प्रथम भाग – हयवरट् सूत्र में हकार के ग्रहण का प्रयोजन**
अट् – अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ, ह्, य्, व्, र् = 13 वर्ण
अश् – अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ, ह्, य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द् = 29 वर्ण
हश् – ह्, य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द् = 20 वर्ण
इण् – इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ, ह्, य्, व्, र्, ल् = 13 वर्ण
यदि हयवरट् सूत्र में हकार नहीं होता तो उपरोक्त चारों प्रत्याहारों में भी हकार का ग्रहण नहीं हो पाता। इन चार प्रत्याहारों में हकार नहीं होने से क्या समस्या आती, इसको निम्नलिखित उदाहरणों से समझने का प्रयास करते हैं।

**1– अट् प्रत्याहार में हकार ग्रहण करने का फल**
अर्हेण में रेफ के बाद हकार (अट) के व्यवधान होने पर भी 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि'[1] सूत्र से णत्व हो गया है। यथा–
अर्ह + टा – स्वौजसमौट्छष्टा.....
अर्ह + इन – टाङ्सिङसामिनात्स्याः
अर्हेन– आद् गुणः
अर्हेण – अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि

यदि हयवरट् सूत्र में हकार नहीं होता तो अट् प्रत्याहार में भी हकार नहीं होता और तब अर्हेण के स्थान पर 'अर्हेन' रूप बनता।

### 2– अश् प्रत्याहार में हकार के ग्रहण का फल

देवा हसन्ति में हकार (अश्) परे होने पर 'भो–भगो–अघो–अपूर्वस्य योऽशि'[2] सूत्र से र् (रु) के स्थान पर यकार आदेश हुआ है। यदि हयवरट् में हकार नहीं होता तो अश् प्रत्याहार में भी हकार नहीं होता। यथा–

देवा + जस् (अस्) हसन्ति
देवास् + हसन्ति'प्रथमयोः पूर्व–सवर्णः'
देवा रु (र्) हसन्ति'स–सजुषो रुः'
देवा य् हसन्ति'भो–भगो–अघो–अपूर्वस्य योऽशि'

देवा हसन्ति'हलि सर्वेषाम्'
यदि हयवरट् सूत्र में हकार नहीं होता तो अश् प्रत्याहार में भी हकार नहीं होता और अश् प्रत्याहार में हकार नहीं होने से 'भो–भगो–अघो–अपूर्वस्य योऽशि'सूत्र से र् (रु) के स्थान पर यकार नहीं होता।

### 3– हश् प्रत्याहाार मे ंहकार के ग्रहण का फल

'देवो हसति' इत्यादि उदाहरणों में हकार (हश्) को निमित्त मानकर 'हशि च'[3] सूत्र से र् (रु) के स्थान पर उत् (उ) आदेश होता है। यदि हरवरट् सूत्र में हकार नहीं होता तो अश् प्रत्याहार में भी हकार नहीं होता।

देव सु (स्) हसति
देव रु (र्) हसति –'स–सजुषो रुः'
देव उ हसति –'हशि च'
देवो हसति –'आद् गुणः'

यदि हयवरट् सूत्र में हकार नहीं होता तो हश् प्रत्याहार ही नहीं बनता, जब हश् प्रत्याहार नहीं बनता, तब 'हशि च' सूत्र ही नहीं बनता। इस प्रकार उपरोक्त उदाहरण में र् (रु) के स्थान पर उकार नहीं होता। अतः रु (र्) के स्थान पर 'उ' करने के लिए हश् प्रत्याहार में हकार का होना आवश्यक है। हश् प्रत्याहार में हकार तभी आयेगा जब हयवरट् सूत्र में हकार होगा।

### 4– इण् प्रत्याहार में हकार के ग्रहण का फल

लिलिहिध्वे/लिलिहिढ्वे आदि उदाहरणों में 'विभाषेटः'[4] सूत्र से विकल्प से मूर्धन्य आदेश। यथा–

लिह् लिट् (ल्)'परोक्षे लिट्'
लिह् ध्वम् (ध्वे)'तिप्तस्झिसिप् .....'
लिह् लिह् ध्वे'लिटि धातोरनभ्यासस्य'
लिलिह् ध्वे'हलादिः शेषः'
लिलिह् इट् (इ) ध्वे'आर्धधातुकस्येड् वलादेः'
लिलिह् इ ढ्वेविभाषेटः'

### लिलिहिध्वे/लिलिहिढ्वे

'इण्' प्रत्याहार में हकार के ग्रहण के लिए हयवरट् सूत्र में हकार का होना आवश्यक है। यदि हयवरट् सूत्र में हकार नहीं होता तो इण् प्रत्याहार में हकार नहीं आ पाता। इण् प्रत्याहार में हकार नहीं होता तो, लिलिहिध्वे/लिलिहिढ्वे आदि उदाहरणों में वैकल्पिक मूर्धन्य आदेश नहीं होता। इसलिए इण् प्रत्याहार में हकार का होना आवश्यक है। 'विभाषेटः' सूत्र के अनुसार पहले इण् प्रत्याहार का कोई वर्ण हो, इण् प्रत्याहार के वर्ण के बाद कोई इट् हो, इट् के बाद लिट् का धकार हो तो धकार के स्थान पर विकल्प से ढकार हो जाता है। यदि हयवरट् सूत्र में हकार नहीं होता तो, इण् प्रत्याहार में भी हकार नहीं आता। इण् प्रत्याहार में हकार नहीं होता तो यहाँ 'विभाषेटः' सूत्र नहीं लगता।

## द्वितीय भाग– हल् सूत्र में हकार ग्रहण का प्रयोजन

हल् सूत्र में हकार का ग्रहण वल्, रल्, झल् और शल् प्रत्याहारो में हकार के ग्रहण हेतु किया गया है।

वल् = व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्, ह् – 32 वर्ण
रल् –
र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्, ह् –31 वर्ण
झल् – झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्, ह् – 24 वर्ण
शल् – श्, ष्, स्, ह् – 4 वर्ण

उपरोक्त चार सूत्रों में हकार के ग्रहण हेतु हल् सूत्र में हकार का ग्रहण किया गया है।

### 1– वल् प्रत्याहार में हकार के ग्रहण का फल

रुदिहि / स्वपिहि इत्यादि उदाहरणों में ''रुदादिभ्यः सार्वधातुके''[5] सूत्र से वलादि सार्वधातुक प्रत्यय को इट् आगम। यथा–

| | |
|---|---|
| रुद् लोट् (ल्) | लोट् च |
| रुद् सिप् ( सि ) | तिप्तस्झिसिप्थस्थ..... |
| रुद् शप् ( सि) | कर्तरि शपः |
| रुद् सिअदि | प्रभृतिभ्यः शप् |
| रुद् हि | सेर्ह्यपिच्च |
| रुद् इट् (इ) हि | रुदादिभ्यः सार्वधातुके |

### रुदिहि

यहाँ रुद् के बाद आने वाला हकार सार्वधातुक प्रत्यय का प्रथम वर्ण है। यदि हकार हल सूत्र में नही होता तो हकार वल् प्रत्याहार में भी नहीं आता और ''रुदादिभ्यः सार्वधातुके'' सूत्र से वलादि प्रत्यय को इट् का आगम नहीं होता। तात्पर्य यह है कि ऐसे प्रत्यय को इट् आगम होता है जिसका प्रथम वर्ण वल् हो और वह सार्वधातुक हो।

स्वपिहि आदि रूप भी इसी प्रकार सिद्ध होंगे।

### 2– रल् प्रत्याहार में हकार के ग्रहण का फल

स्निहित्वा /स्नेहित्वा इत्यादि उदाहरणों में 'रलो व्युपधाद् हलाऽऽदेः संश्च'[6] सूत्र से क्त्वा प्रत्यय का विकल्प से कित् विधान्। फलस्वरूप विकल्प से गुण का निषेध।

स्निह् + क्त्वा ( त्वा )–समान–कर्तृकयोः पूर्वकाले
स्निह् + इट् ( इ ) त्वा–आर्धधातुकस्येड् वलादेः
स्निह् इ त्वा–रलो व्युपधाद् हलाऽऽदेः संश्च , क्ङिति च
स्निहित्वा /स्नेहित्वा–कित् न होने से गुण का विधान 'पुगन्त–लघूपधस्य च'

'रलो व्युपधाद् हलाऽऽदेः संश्च'सूत्र के अनुसार ऐसी धातु जिनका अन्तिम वर्ण रल् हो और आदि वर्ण हल् हो और उपधा में 'उ, इ' हो। स्निह् धातु में हकार अन्तिम वर्ण, सकार आदि वर्ण है, उपधा में हकार है। हकार हल् सूत्र में ग्रहीत है इसलिए रल् प्रत्याहार में हकार है यदि हकार हल् सूत्र में नहीं होता तो यह धातु रलान्त नहीं बन पाती।

### 3–झल् प्रत्याहार में हकार के ग्रहण का फल

अदाग्धाम् इत्यादि उदाहरणों में 'झलो झलि'[7] सूत्र से सिच् (स्) का लोप। यथा–

| | |
|---|---|
| दह् लुङ् (ल्) | लुङ् |
| दह् तस् | तिप्तस्झिसिप्थस्थ..... |
| दह् च्लि तस् | च्लि लुङि |
| दह् सिच् ताम् | च्लेःसिच्,तस्–थस्–थ–मिपां तां–तं–तामः |

| | |
|---|---|
| अट् (अ) दह् स ताम् | अनुबन्ध लोप, 'लुङ्–लङ्–लृङ्क्ष्वड् उदात्तः' |
| अदह् ताम् | झलो झलि |
| अदाघ् धाम् | वद–व्रज हलन्तस्याचः ,दाऽऽदेर्धातोर्धः |
| अदाघ धाम् | झषस्त–थोर्धोऽघः |
| अदाग् धाम् | झलां जश् झशि |

**अदाग्धाम्**

'झलो झलि' सूत्र के अनुसार दो झलों के बीच आने वाले सकार का लोप हो जाता है। यहाँ सिच् (स्) का सकार दो झलों के बीच आया है। अर्थात् सिच् का सकार, हकार और तकार के बीच में आया है। हकार हल् सूत्र में है। इसलिए झल् प्रत्याहार में हकार है। यदि हकार हल् सूत्र में नहीं होता, तब हकार झल् प्रत्याहार में भी नहीं होता। यदि हकार झल् प्रत्याहार में नहीं होता तो यहाँ 'झलो झलि' सूत्र से सकार का लोप प्राप्त नहीं होता।

**4– शल् प्रत्याहार में हकार के ग्रहण का फल**

अधुक्षत् / अलिक्षत् इत्यादि उदाहरणों में 'शल इगुपधाद् अनिटः क्सः'[8] सूत्र से लुङ् में च्लि के स्थान पर 'क्स' आदेश। यथा–

| | |
|---|---|
| दुह् लुङ् (ल्) | लुङ् |
| दुह् तिप् (ति) | तिप्तस्झिसिप्थस्थ..... |
| दुह् च्लि ति | च्लि लुङि |
| दुह् क्स (स) ति | शल इगुपधाद् अनिटः क्सः |
| अट् (अ) दुह् स ति' | लुङ्–लङ्–लृङ्क्ष्वड् उदात्तः' |
| अदुढ् स ति | हो ढः |
| अदुक् स ति | षढोः कः सि |
| अधुक् स ति | एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्–ध्वोः |
| अधुक्षत् | आदेशप्रत्यययोः, इतश्च |

**अधुक्षत्**

'शल इगुपधाद् अनिटः क्सः' सूत्र के अनुसार जिस धातु का अन्तिम वर्ण शल् हो और धातु की उपधा में इक् (इ, उ, ऋ, लृ) हो और वह धातु अनिट् हो तो उस धातु के बाद आने वाले च्लि के स्थान पर क्स (स) हो जाता है। उपरोक्त उदाहरणों में धातु का अन्तिम वर्ण शल् (ह्) है और धातु की उपधा में इक् (उ) है और धातु अनिट् भी है। यदि हल् सूत्र में हकार नहीं होता तो शल् प्रत्याहार में भी हकार नहीं होता और शल् प्रत्याहार में हकार के न होने से यहाँ 'च्लि' के स्थान पर 'क्स' नहीं होता। इसलिए हल् सूत्र में हकार का होना आवश्यक है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**


1. लघुसिद्धान्तकौमुदी सूत्र सं. 138 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' 8/4/2
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी सूत्र सं. 108 'भो–भगो–अघो–अपूर्वस्य योऽशि' 8/3/17
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी सूत्र सं. 107 'हशि च' 6/1/110
4. लघुसिद्धान्तकौमुदी सूत्र सं. 530 'विभाषेटः' 8/3/79
5. सिद्धान्तकौमुदीसूत्र सं. 2474 ''रुदादिभ्यः सार्वधातुके'' 7/6/76
6. लघुसिद्धान्तकौमुदी सूत्र सं. 884 'रलो व्युपधाद् हलाऽऽदेः संश्च' 1/2/26
7. लघुसिद्धान्तकौमुदी सूत्र सं. 480 'झलो झलि' 8/2/26
8. लघुसिद्धान्तकौमुदी सूत्र सं. 593 'शल इगुपधाद् अनिटः क्सः' 3/1/45